Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

**डॉ. हरिचरण मीना***

*प्रोफेसर (समाजशास्त्र) श.कै.रि.सि.राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर (राज.) भारत

**शोध सारांश –** भारतीय समाज सांस्कृतिक विविधता मे एकता एवं सांस्कृतिक समृद्धि वाला समाज हैं। भारत मे कश्मीर से कन्याकुमारी एवं कच्छ से अरूणाचल तक विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, जाति, मजहब एवं संस्कृति के लोग निवास करते हैं एवं उनके रहन सहन खान पान वेशभूषा बोलचाल भाषा रीतिरिवाज मे विविधता के होते हुए सभी भारतीय समाज का अभिन्न अंग हैं। वैश्वीकरण एक प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा पूरे विश्व की सामाजिक इकाई उनकी संस्कृतियां और अर्थव्यवस्थाएं परस्पर जुड जाती हैं। यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया हैं जो संचार व प्रोधोगिकी प्रचार प्रसार के कारण अनवरत चलती रहती हैं। यह पूरे विश्व के आधुनिक समाज को नियंत्रित करती हैं एवं पूरे विश्व मे आवश्यकता की सभी वस्तुए मांग के अनुरूप उपलब्ध होने मे सहूलियत प्रदान करती हैं। वैश्वीकरण मे विचार, विचारधारा, भूमिका, सांस्कृतिक मान्यताओ का अद्यतित आदान प्रदान होता हैं। यह सामाजिक मुद्धो को नए एवं अनूठे तरीको से हल करने की अनुमति देता हैं। वैश्वीकरण संस्कृति, समाज, राजनीति, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया हैं।

वैश्वीकरण का भारतीय समाज की संस्कृति, संगीत, फिल्म, परिवार, विवाह, जाति व्यवस्था, धर्म, परम्परा, भाषा, व्यापार, अर्थव्यवस्था,रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार इत्यादि पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो प्रकार से देखा जा सकता हैं। वैश्वीकरण को भारतीय समाज मे संस्कृति का सजातीयकरण एवं ग्लोकलाइजेशन के रूप मे देखा जा सकता हैं। महिलाओ पर वैश्वीकरण के प्रभाव को अधिकार, स्वतंत्रता, न्याय के प्रति जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी शिक्षा, वैश्विक मंचो पर पहुंचना, रहन सहन इत्यादि मे सकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं दूसरी ओर एकल परिवार, तलाक होना, विवाह संस्था पर बढता खतरा, कुटीर उद्योगों पर खतरा, दोहरी जिम्मेदारी इत्यादि को नकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं। युवाओं पर भी वैश्वीकरण के प्रभाव को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उच्च पैकेज सैलरी, स्टार्टअप्स, पश्चिमी एवं भारतीय मूल्यो का सम्मिश्रण के रूप में सकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं वही दूसरी ओर युवाओं का विदेश की ओर पलायन, परम्परागत भारतीय मूल्यों की अवहेलना इत्यादि को नकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं।

**शब्द कुंजी –** सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक समृद्धि,सतत प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी, सहूलियत, अद्यतित आदान प्रदान, सजातीयकरण एवं ग्लोबलाइजेशन।

**प्रस्तावना –** भारतीय समाज सांस्कृतिक विविधता मे एकता एवं सांस्कृतिक समृद्धि वाला समाज हैं। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और प्रौद्योगिकी में प्रगति ने विश्व को अत्यधिक परस्पर सम्बन्धित एवं अन्योन्याश्रित बनाया हैं। वैश्वीकरण को भूमण्डलीकरण और ग्लोबलाइजेशन के नाम से भी जाना जाता हैं। वैश्वीकरण ने विश्व के सभी देशों को विभिन्न प्रकार से अन्तर्सम्बन्धित एवं प्रभावित किया हैं। विश्व के सभी देशो में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव भी वैश्वीकरण की महत्वपूर्ण उपज मानी जा सकती हैं। वर्तमान में दुनिया मे उपभोक्ताओं के पास उनके खरीदे जाने वाले उत्पादों और सेवाओं दोनो के लिए विविध प्रकार के विकल्प उपलब्ध हैं। वैश्वीकरण विभिन्न देशों के लोगों, कम्पनियों और सरकारों के बीच बातचीत और एकीकरण की एक प्रक्रिया हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश द्वारा संचालित और सूचना प्रोद्योगिकी द्वारा सहायता प्राप्त प्रक्रिया हैं। विश्व में आधुनिक वैश्वीकरण की शुरूआत शीतयुद्ध की समाप्ति और 1991 के सोवियत संघ के विघटन के साथ हुई हैं। भारत में 1991 के एलपीजी सुधार के बाद उदारीकरण और निजीकरण के साथ वैश्वीकरण एक क्रांतिकारी शक्ति के रूप मे आया और उसने भारत की आत्मा को बदल दिया। वैश्वीकरण मुख्यत: एक आर्थिक प्रक्रिया है लेकिन इसके स्पष्टत: गहरे सामाजिक निहितार्थ हैं। दुनिया के बहुत सारे देशों मे वैश्वीकरण का विरोध भी हुआ हैं उन्होने इसे संस्कृति के उजाडने के रूप मे इसे माना हैं।

भारतीय समाज में वैश्वीकरण के प्रभाव को विभिन्न क्षेत्रों मे विभिन्न रूपों में देखा जा सकता हैं। जिसके कारण अनेक नवीन अवधारणाओं का जन्म हुआ हैं। वैश्वीकरण का भारतीय समाज की संस्कृति, संगीत, फिल्म, परिवार, विवाह, जाति व्यवस्था, धर्म, परम्परा, भाषा, व्यापार, अर्थव्यवस्था, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार इत्यादि पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो प्रकार से देखा जा सकता हैं। वैश्वीकरण को भारतीय समाज मे संस्कृति का सजातीयकरण एवं ग्लोकलाइजेशन के रूप मे देखा जा सकता हैं। सजातीयकरण से अभिप्राय विभिन्न जातियों मे सामाजिक रूप से समानता

का होना हैं। भारतीय समाज जाति व्यवस्था पर आधारित समाज हैं यहां पर हजारो की संख्या में जातियां हैं सभी जातियों के रहन सहन खान पान वेश भूषा मे विभिन्नता रही हैं। व्यक्तियों के पहनावें को देख कर उसकी जाति का अंदाजा लगाया जा सकता था। वैश्वीकरण के प्रभाव उनके रहन सहन खान पान पहनावे पर पड़ा है। सभी जातियो के पुरूष एक पेंट शर्ट एवं महिलाएं साड़ी पहनने लगे है। सभी एक जैसा खान पान एवं रहन सहन करने लगे हैं। यही सजातीयकरण की अवधारणा हैं।

वैश्वीकरण के कारण धार्मिक कट्टरता का उदय एवं कॉस्मोपॉलिटन स्थानीयता का उदय हुआ हैं। जिसके कारण ग्लोबलाइजेशन की अवधारणा अस्तित्व में आयी हैं। ग्लोबलाइजेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वैश्वीकरण और स्थानीयकरण जैसे शब्दो का समावेश हैं। यह समकालीन सामावए राजनैतिक और आर्थिक प्रणालियों मे सार्वभौमिक और विशिष्टीकरण दोनों प्रवृतियो की एक साथ होने वाली घटना की ओर इशारा करता हैं। उदाहरण के रूप मे भारत मे देशी चीनी का लोकप्रियकरण मैकडोनाल्ड भारत में आलू टिक्की बर्गर आदि खुब बिक रहे हैं।

भारतीय समाज के युवाओं को वैश्वीकरण ने सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित किया हैं। देश के युवा वैश्वीकरण और असमानता की दुनिया मे बड़े हो रहे हैं एवं एक ऐसी विकास प्रक्रिया मे भाग ले रहे हैं जो लोगों को एक दूसरे के करीब ला रही हैं और उनके बीच खाई को चौड़ा कर रही हैं। वैश्वीकरण के कारण देश के युवाओं के स्वास्थ्य एवं शिक्षा मे सुधार हुआ हैं। आज के युवा आधुनिकता एवं परम्पराओ का समन्वय कर रहे हैं। युवा एक अनौपचारिक समारोह के लिए जींस पहनना पसन्द कर रहे है लेकिन औपचारिक अवसरों पर पारम्परिक पौशाक पहनना पसन्द कर रहे हैं। युवा अपनी पसन्द से प्रेम विवाह का फैसला कर सकते है तो दूसरे ओर अपने माता पिता से अपने साथी की पसन्द को स्वीकार करने और विवाह पर अपना आशीर्वाद देने के लिए भी उत्सुक रहते हैं। वैश्वीकरण का ही प्रभाव हैं कि आज युवा अधिक जागरूक एवं अधिक स्वतंत्र हो रहे हैं और जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण निर्णयो शिक्षा, व्यवसाय इत्यादि के मामले मे स्वयं की भूमिका माता पिता से ज्यादा हैं। जहां एक ओर युवाओं को वैश्वीकरण ने सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है वही दूसरी ओर नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया हैं। वैश्वीकरण से भारत मे उपभोक्तावाद का विकास हुआ है। वर्तमान मे युवा बढती व्यवसायिकता की संस्कृति से दृढतापूर्वक जुड़ रहे हैं जिसने समकालीन भारतीय समाज के ताने बाने को बदल दिया हैं जिसे युवाओं द्वारा पश्चिमी खाद्य पदार्थो और पेय पदार्थो, पौशाकों, सौन्दर्य प्रसादनों, अलंकरणों, संगीत, नृत्य आदि को स्वीकार करने मे देखा जा सकता हैं। वैश्वीकरण के कारण युवाओं मे पारम्परिक भारतीय सामाजिक मूल्य कमजांर हुए हैं। सूचना प्रोद्योगिकी के युग मे इंटरनेट पर अश्लील सामाग्री एवं पोनोग्राफी के कारण रिश्तों एवं विवाह संस्था को गहरा झटका लग रहा हैं। वैश्वीकरण युवाओं में बहिष्कार को जन्म दिया हैं। वैश्वीकरण ने अभिजात वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच पहले से मौजूद असमानताओं को सक्रिय रूप से बढाया हैं।

वैसे तो युवा और वयस्क वैश्वीकरण की प्रक्रिया के मुख्य वाहक हैं लेकिन निक्रिय कारक के रूप में बच्चे भी विभिन्न रूप मे प्रभावित हुए हैं। वैश्वीकरण के कारण बहुसंस्कृतिवाद का समावेश हुआ हैं। विभिन्न संस्कृतियों एवं जातीयताओं के प्रति सम्मान और सहिष्णुता में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण से बच्चों में सीखने के उन्नत अवसर उपलब्ध हुए हैं। विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों की जानकारी को व्यापक बना दिया हैं। सूचना प्रोद्योगिकी के युग में इंटरनेट ने सभी समाजो के बच्चो के लिए अवसरो की सुविधा बढी हैं। वैश्वीकरण ने बच्चों को सकारात्मक के साथ साथ नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया हैं। वैश्वीकरण के ई कचरे के कारण बच्चों को जहरीली हवा और पानी की समस्या के साथ साथ अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। वैश्वीकरण के कारण बच्चों में फास्ट फूड संस्कृति एवं मैकडोनाल्डीकरण की संस्कृति पनप रही है जो कि बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं। सोशल नेटवर्किंग और पबजी जैसे ऑनलाइन गेमिंग भी बच्चों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डाल रही हैं। वैश्वीकरण के कारण समाज मे बाल श्रम की समस्या बढ रही हैं।

वैश्वीकरण ने जाति व्यवस्था के कठोर बन्धन, मेलजोल और अंतरजातीय विवाह के मानदंडों को शिथिल कर दिया हैं। आर्थिक अवसरों के विस्तार और श्रम के पारंपरिक विभाजन के टूटने से सामाजिक गतिशीलना को बढावा मिला हैं। वैश्वीकरण मे प्रवास के माध्यम से धार्मिक विचारों के प्रसार ने पश्चिमी देशों में आध्यात्मिक संबद्धता को बढावा दिया हैं। वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही देव दासी प्रथा और तीन तलाक जैसी शोषणकारी परम्पराओं पर सवाल उठाए हैं। विवाह व परिवार नामक संस्थाओं में भी आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। संस्कृति का एकरूपीकरण हुआ हैं। बढती वैश्विक अंतर्संबंधता और अन्योन्याश्रितता की प्रक्रिया ने दुनिया भर में संस्कृति के एकरूपीकरण को जन्म दिया हैं। वैश्वीकरण ने भारतीय खाद्य संस्कृति एवं वस्त्र संस्कृति को नकारात्मक रूप से भी प्रभावित किया हैं। वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में सयुक्त परिवार की प्रथा में कमी एवं एकाकी परिवारो का प्रभुत्व बढा हैं। लिव-इन-संस्कृति जैसे आधुनिक विचारों को भी समाज मे अपवादस्वरूप में स्वीकार किया जाने लगा हैं। वैश्वीकरण ने क्षेत्रीय और अल्पसंख्यक भाषाओं पर अंग्रेजी भाषा को हावी कर दिया हैं। शहरी परिवार दैनिक बोलचाल में भी अंग्रेजी का उपयोग करने लगे हैं। जिसके कारण हमारी मातृ भाषा हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाएं कमजोर हो रही हैं।

महिलाओ पर वैश्वीकरण के प्रभाव को अधिकार, स्वतंत्रता, न्याय के प्रति जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी शिक्षा, वैश्विक मंचो पर पहुंचना, रहन सहन इत्यादि मे सकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं दूसरी ओर एकल परिवार, तलाक होना, विवाह संस्था पर बढता खतरा, कुटीर उद्योगों पर खतरा, दोहरी जिम्मेदारी इत्यादि को नकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं। युवाओं पर भी वैश्वीकरण के प्रभाव को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उच्च पैकेज सैलरी, स्टार्टअप्स, पश्चिमी एवं भारतीय मूल्यो का सम्मिश्रण के रूप में सकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं वही दूसरी ओर युवाओं का विदेश की ओर पलायन, परम्परागत भारतीय मूल्यों की अवहेलना इत्यादि को नकारात्मक प्रभाव के रूप मे देखा जा सकता हैं।

**निष्कर्ष –** निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि वैश्वीकरण का भारतीय समाज की संस्कृति, संगीत, फिल्म, परिवार, विवाह, जाति व्यवस्था, धर्म, परम्परा, भाषा, व्यापार, अर्थव्यवस्था, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार इत्यादि सभी क्षेत्रों मे सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव देखा जा सकता हैं। एक ओर समाज आर्थिक उन्नति कर रहा हैं दूसरी ओर नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का पतन हो रहा है। वैश्वीकरण के कारण बहुसंस्कृतिवाद का समावेश हुआ हैं। विभिन्न संस्कृतियों एवं जातीयताओं

के प्रति सम्मान और सहिष्णुता में वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण से बच्चों में सीखने के उन्नत अवसर उपलब्ध हुए हैं। भारतीय समाज की भौतिक एवं अभौतिक दोनों ही संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखा जा सकता हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-**

1. आहूजा राम, 'भारतीय सामाजिक व्यवस्था' 2005
2. सिंह योगेन्द्र, 'भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण' 2006
3. सिंह जे.पी., 'आधुनिक भारत का समाज' 2019
4 श्रीनिवास एम.एन., 'आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन' 2019
5. दैनिक समाचार पत्र

**********